ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 7 | July 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i7.156

# अरुणाचल प्रदेश की आदी समुदाय की कृषि कार्यों में आदी स्त्री की भूमिका

**डॉ. मुमने परमे**

सहायक प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू कॉलेज पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश

**Email:** mumneperme@gmail.com

## सारांश

*अरुणाचल प्रदेश के आदी समुदाय की सामाजिक संरचना में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह समुदाय कृषि पर आधारित जीवनशैली अपनाए हुए है, जिसमें पुरुषों और महिलाओं के कार्यक्षेत्र स्पष्ट रूप से विभाजित हैं। विशेष रूप से महिलाओं की भूमिका कृषि कार्यों में केंद्रीय रही है। पुरुष जहाँ झूम खेती में पेड़ों की कटाई जैसे शारीरिक रूप से कठिन कार्यों को करते हैं, वहीं महिलाएँ बीज बोने, कटाई, भंडारण तथा बागवानी जैसे अधिकांश कृषिकार्य स्वयं करती हैं। अरुणाचल प्रदेश के आदी समुदाय पारंपरिक रूप से कृषि पर निर्भर है। इस समुदाय में महिलाएँ न केवल घरेलू कार्यों में, बल्कि कृषि कार्यों में भी समान रूप से योगदान देती हैं। आदी स्त्रियाँ खेती की लगभग सभी प्रक्रियाओं में भाग लेती हैं, जैसे भूमि की तैयारी, बीज बोना, निराई-गुड़ाई, कटाई और फसल संग्रहण। झूम खेती' (shifting cultivation) आदी समुदाय की प्रमुख कृषि पद्धति है, और इस प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वे सुबह जल्दी खेतों में पहुँच जाती हैं और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं। इसके अलावा महिलाएँ बीजों का चयन, संरक्षण तथा पारंपरिक जैविक खाद तैयार करने में भी कुशल होती हैं। आदी स्त्रियाँ न केवल खेतों में कार्य करती हैं, बल्कि कृषि उत्पादों को बाजार में ले जाकर बेचने का कार्य भी संभालती हैं, जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को सशक्त बनाने में योगदान मिलता है। इस प्रकार आदी समुदाय की महिलाएँ कृषि कार्यों की रीढ़ मानी जाती हैं। उनका श्रम, ज्ञान और प्रतिबद्धता पारंपरिक कृषि प्रणालियों के संरक्षण और सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।*

***बीजशब्द:*** *अरुणाचल प्रदेश, आदी समुदाय, झूम खेती, पारंपरिक कृषि, स्त्री, सामाजिक-आर्थिक विकास.*

## प्रस्तावना

आदी समाज कृषि प्रधान समाज है। कृषि कार्यों में स्त्री या पुरूष के कार्य बिल्कुल अलग-अलग निर्धारित है। कृषि क्षेत्र में अधिकांश कार्य महिलाओं द्वारा किए जाते हैं। झूम की खेती को छोड़कर कृषि महिलाओं द्वारा ही संपादित होती हैं। झूम खेती में पेड़ों की कटाई शामिल होती है। पेड़ों की कटाई पुरूष करते है। उसके बाद महिलाओं द्वारा सूखे तने और शाखाओं में आग लगा दी

जाती है। घास-फूस की सफाई महिलाओं द्वारा की जाती है। फिर वे एक-एक करके छेद में बीज डालती हैं जो वे नुकीले बांस की सहायता से छेद करती हैं। निराई भी स्त्रियों का ही कार्य होता हैं। जब कटाई का समय आता है तो महिलाए दरांती और बांस या बेंत से बनी टोकरी लेकर खेत में जाती हैं। मकई काटने के बाद वह टोकरी में डालती है जब तक की टोकरी बहुत भारी न हो जाए। वह मकई को सुरक्षित स्थान पर ही उतारती है। दिन के काम के अंत में वह एक भार घर ले जाती है।

आदी स्त्रियाँ खेतों में धान के अलावा मकई, अदरक, मिर्च, बैंगन, कुम्हरा, लौकी, सरसों, तरबूज, कच्छू, तिल, कद्दू और विभिन्न प्रकार की स्थानीय साग-सब्जियाँ भी उगाती हैं। खेतों में जरूरतों के सभी सामग्री वह खुद ही उगाती है। रसोई में दैनिक जरूरतों की सभी सामग्री वह खुद ही बागवानी में उगाती है। तीनों पहर की सब्जी अपने ही उगाई सब्जियों से पकाती है। माँस एवं मछली भी इनका प्रिय भोजन है। त्योहारों के दौरान मवेशियों की बलि द्वारा प्राप्त माँस को आग में सुखाकर रख दिया जाता है ताकि बरसात के दिनों में उसे खाया जा सकें।

महिलाएँ समूह में मछलियाँ पकड़ने जाती हैं जिसे स्थानीय भाषा में 'सिबोक पतनाम' कहते है। 'सिबोक पतनाम' सामुदायिक मछली पकड़ने की प्रक्रिया को कहते है। इस प्रक्रिया में मूल नदी के रास्ते को पत्थरों, बाँस और लकड़ियों द्वारा अवरुद्ध कर दिया जाता है ताकि नदी सूख जाए और आसानी से मछलियों को पकड़ा जा सके। इस कार्य में सभी बढ़-चढ़कर भाग लेती है। स्त्रियाँ मछली पकड़ने से पहले वन के देवता और नदी के देवता से भी प्रार्थना करती हैं कि 'हे देवता हम यहाँ शिकार करने आए है आप हमें गलत न समझे। हमें आशीर्वाद दे कि शिकार में सफलता मिलें'। यह कार्य मनोरंजन भरा होता है। स्त्रियाँ इस दौरान लोकगीत भी गाती हैं। यथा –

ल ल आङोङ डेरे बीते को
लक लक ङोलु आरदा आलोङ
ताकाम अम इकूमने ङोलु
बोङाल यापगो गीदाम सिम[1]

**भावार्थ :**

स्त्रियाँ मछलियां पकड़ते हुए गाती हैं कि 'ओह ! इतना सुहावना मौसम है। इस मौसम में हम सभी दोस्त मिलकर मछली पकड़ रहे है, बहुत ही अपार खुशी की अनुभूति हो रही हैं। आओ दोस्तों हम सभी गुनगुनाते हुए इस कार्य को करें'।

घर की लगभग सभी जरूरतों को घर की स्त्रियाँ पूरा करती हैं चाहे वह बागवानी हो, कृषि कार्य हो, बुनाई-कढ़ाई हो। बागवानी के दौरान स्त्री स्वत: ही गुनगुनाती है और अपनी जीवन की पीड़ा को व्यक्त करती है -

आपी आरासो मीङकी आराङ अ
ङोक्के येनाम अम पोकी आराङ अ[2]

धान की खेती के दौरान कन्याओं का उत्साह वर्धन के लिए 'नेरो आमीङ माया' नामक निम्न श्रम गीत को गाया जाता है -

| | |
|---|---|
| या रिलुङ | रिलुङ |
| माया | माया |
| बोयीङ | बोयीङ रिलुङ मिमुम माया |
| ननम | ननम[3] |

**भावार्थ :**

प्रस्तुत गीत आदी समुदाय की कृषि गतिविधियों को दर्शाने वाला गीत है। इस गीत में युवतियों को खेती कार्य के लिए गीतों द्वारा आमंत्रित किया जाता हैं। 'आओ लड़कियों आलस छोड़कर खेती कार्य के लिए खेतों में आ जाओ, हमें और भी बहुत सारे खेती के काम करने हैं। धान की खेती के लिए सारे कार्यों को करना है, इसीलिए सुनो लड़कियों तुम सभी तुरंत आ जाओ'। लड़कियां इन स्फूर्तिदायक गीतों को सुनकर उत्साहित होकर कृषि-कार्यों में लग जाती हैं।

अतः उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्त्री घर-परिवार के सारे कामों को करती है। घर में खाना पकाने से लेकर बच्चे के पालन-पोषण तक एक स्त्री ही करती है। बच्चे जनना भी अपने आप में एक जटिल कार्य है। परंतु अपनी जटिलताओं के मध्य भी वह इन सभी कार्य को भली-पूर्वक निभाती है। घर के अंदर वाले काम तो वह करती ही है घर के चौखट के बाहर वाले कामों को भी वह निष्ठापूर्वक करती है। उम्रभर वह इन्हीं कामों में खपती है। आदी समाज में खेती-किसानी करना एक स्त्री का गहना समझा जाता है। स्त्रियाँ ताउम्र घर और कृषि कार्यों में ही उलझी रहती हैं। इन कार्यों के इतर उसके जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

बुनाई के अलावा स्त्रियाँ घर-परिवार के अन्य कार्यों को भी खुद ही करती हैं। जंगल से जलाऊ लकड़ी का संग्रह भी विशेष रूप से महिलाओं का कर्तव्य है। आदी गाँव में यह एक दिलचस्प नजारा होता है जब शाम को जंगल से जलाऊ लकड़ी की टोकरी लेकर आने वाली महिलाओं का एक समूह खेतों से घर लौटती है।

जंगल से जलाऊ लकड़ी लाने में लड़कियों की कोई आयु सीमा नहीं होती, लगभग दस वर्ष की आयु से लेकर अपने जीवन के अंतिम अवधि तक स्त्रियाँ यह कार्य बिना कोई हिचक और दबाव के करती है। आदी गाँव में बहुत ही बूढ़ी औरत जंगल से जलाऊ लकड़ी लेकर गाँव में आना एक आम दृश्य है। यदि कोई बूढ़ी औरत से पूछता है कि इस उम्र में वह जलाऊ लकड़ी क्यों ला रही हे तो वह कहती है कि यह जीवन का हिस्सा है। भार ढोना उनके लिए कुछ भी नहीं है वे इसे ऐसे ढोते है जैसे उन्होंने खेतों में कुछ कार्य किया ही न हों। इसलिए सिर से टंगी टोकरी को ढोने के अलावा उन्हें अक्सर चलते समय कच्चे रूई से धागा बनाते देखा जाता है।[4]

ये सभी आदी महिला के दैनिक कार्य है। वह जंगल से जलावन लाती है। आपोङ तैयार करना, खाना पकाना, पारंपरिक आदी करघे में कपड़े बुनना और कृषि करना सभी घरेलु कार्यों को सीखना बाल्यकाल से शुरू कर देती है। बचपन से ही बच्चियां अपनी जिम्मेदारी सीख जाती हैं। आदी समाज में लगभग यह एक परंपरा है कि एक कन्या को अपने अगले भाई या बहन को

संभालना होता है। तीन साल की छोटी उम्र में भी परिस्थितिवश उसे अपने छोटे भाई-बहन का ख़्याल रखना अनिवार्य होता है। 'एप्पोन' (बेंत से बनी पेटी) के सहारे वह अपने अनुजों को पीठ पे ढोती है। इतनी छोटी अवस्था में भी जब उसे अपने का होश नहीं है वह छोटे भाई-बहनों का देखभाल करती है। चूंकि कृषि कार्यों में माता-पिता सभी व्यस्त रहते है बच्चों के देखभाल का भार नन्हें कन्धों पर आ जाता है।

जलावन लाना एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। स्त्रियाँ जलावन लाते समय निम्न गीत गाती हैं -

याधी बुलुके सोईन जाजाङ अ लोटटो लो
डोलु देमूल अ दोकाप कापमान अ पाला
डोलु देमूल अ दोगुङ गुमान अ पाला
लेले नेबिला मोको आङोङ अ लेले नेबिला मोको[5]

**भावार्थ :**

प्रस्तुत गीत में स्त्रियाँ जलावन इकट्ठा करते हुए अपने बाल्यकाल की घटनाओं को याद करती हुई गाती हैं कि 'बचपन में हम सभी अपने माता-पिता के आँगन में हँसते-खेलते हुए बचपन गुजारी थी। मिट्टी के संग खेलते वक़्त कभी नहीं सोचा था कि जीवन में यह सब भी करना होगा'।

आदी घरों में वर्तमान काल में भी चूल्हे का प्रयोग किया जाता है। इसलिए जलावन लाना एक अति महत्वपूर्ण कार्य होता है। स्त्रियाँ दिन भर के खेतों में श्रम कार्य के पश्चात शाम को घर की ओर लौटते वक़्त टोकरियों में लकड़ियाँ भरकर लाती देखी जाती हैं। यह नज़ारा आदी गाँवों में आम होता है जहाँ स्त्रियाँ ढलते सूरज की ओट में कतारों में टोकरियों में जलावन लाती हुई अपने-अपने घरों की ओर लौटती हैं।

आदी समुदाय में स्त्रियाँ न केवल कृषि कार्यों की रीढ़ हैं, बल्कि वे घर और समाज की संरचना का भी मुख्य आधार हैं। उनका जीवन कठिन परिश्रम और सामाजिक उत्तरदायित्वों से जुड़ा होता है, जिसमें वे खेत से लेकर चूल्हे तक, हर मोर्चे पर सक्रिय रहती हैं। कृषि कार्यों में उनकी भूमिका पुरुषों से अधिक व्यावहारिक और विविध है। वे खेतों में काम करने के साथ-साथ आवश्यक सब्जियाँ, मसाले, तिलहन और अन्य खाद्य सामग्री भी उगाती हैं, जो घरेलू जीवन की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। झूम खेती में जहाँ पेड़ काटने का काम पुरुषों का होता है, वहीं उसकी तैयारी, बीज बुवाई, निराई और कटाई जैसे श्रमसाध्य कार्य महिलाओं द्वारा किए जाते हैं। इतना ही नहीं, त्योहारों पर मवेशियों की बलि के बाद माँस को संरक्षित करने, पारंपरिक मछली पकड़ने की विधियों में भाग लेने, और इन सब क्रियाओं को गीतों एवं रीति-रिवाजों के साथ निभाने की संस्कृति भी स्त्रियों द्वारा जीवित रखी जाती है। बचपन से ही कन्याओं में ज़िम्मेदारी का भाव उत्पन्न हो जाता है जब वे अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करती हैं और कम उम्र में ही घरेलू कार्यों में दक्ष हो जाती हैं। यह सामाजिक ढांचा न केवल महिलाओं की श्रमशीलता को रेखांकित करता है, बल्कि उनके जीवन के सांस्कृतिक, मानसिक और शारीरिक पहलुओं की भी झलक देता है।

## निष्कर्ष

आदी समुदाय की स्त्रियाँ कृषि कार्यों में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। वे खेत की तैयारी से लेकर फसल की कटाई और विपणन तक सभी चरणों में सक्रिय भागीदारी करती हैं। उनका पारंपरिक ज्ञान, मेहनत और योगदान कृषि की स्थिरता और परिवार की आर्थिक समृद्धि में अहम है। आदी महिलाएँ केवल श्रमिक नहीं, बल्कि कृषि की संरक्षक भी हैं। वे जैविक खेती, बीज संरक्षण और खाद्य सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः आदी स्त्रियाँ न सिर्फ परिवार, बल्कि पूरे समुदाय के सामाजिक और आर्थिक विकास की आधारशिला है। इस प्रकार, यह स्पष्ट होता है कि आदी समाज की कृषि व्यवस्था और घरेलू जीवन में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका न केवल उनकी श्रमशीलता को दर्शाती हैं, बल्कि उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक योगदान को भी गहराई से उजागर करती हैं। उनका योगदान केवल शारीरिक श्रम तक सीमित नहीं, बल्कि उनकी आत्मा और संस्कृति में रचा-बसा हुआ है।

## संदर्भ सूची


[1]. क्षेत्र सर्वेक्षण से प्राप्त गीत, टोकन्यो मेगु, डोपोक गाँव, दिनांक : 24/10/22

[2]. क्षेत्र सर्वेक्षण से प्राप्त गीत, टोकन्यो मेगु, डोपोक गाँव, दिनांक : 24/10/22

[3]. एन. एन. ओसिक, फोल्क सॉन्ग सोंग्स एंड डानसेस ऑफ अरुणाचल प्रदेश डाइरेक्टर ऑफ आर्ट एंड कल्चर, गवर्मन्ट ऑफ अरुणाचल प्रदेश, ईटानगर 2001, पृ. 22-32

[4]. डॉ. जोगेन्द्र नाथ, ए कल्चरल हिस्ट्री ऑफ द आदिस ऑफ अरुणाचल प्रदेश,प्रकाशक: टी. जे. गोगोई, पृथ्वी प्रकाशन, बेलटोला तिनाली, गुवाहाटी 28, 2014, पृ. 78-79

[5]. क्षेत्र सर्वेक्षण से प्राप्त, गेलाक डूपोक, आयेङ गाँव, दिनांक 12/11/22.



***Cite this Article***

***डॉ. मुमने परमे, "अरुणाचल प्रदेश की आदी समुदाय की कृषि कार्यों में आदी स्त्री की भूमिका"*** *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 7, pp. 77-81, July 2025.*

***Journal URL:*** *https://ijmrast.com/*

***DOI:*** *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i7.156*


This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.